1

श्री आदिनाथ भगवान

आदिम तीर्थंकर प्रभो, आदिनाथ मुनिनाथ।
आधि व्याधि अघ मद मिटे, तुम पद में मम माथ।।
शरण चरण हैं आपके, तारण तरण जहाज ।
भव -दधि -तट तक ले चलो, करूणाकर जिनराज।।1।।

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्रादि 1 हजार मुनि श्री सम्मेदशिखर जी के आदिनाथ कूट से सिद्ध हुए, उनके चरणारविंद को मेरा मन, बचन, काय से अनंत बारनमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु

2

श्री अजितनाथ भगवान

जित -इन्द्रिय जित - मदबने, जित -भवविजित-कषाय।
अजित-नाथ को नित नमूँ, अर्जित दुरित पलाय।।
कोंपल पल-पल को पले, वन में ऋतु-पति आय।
पुलकित मम जीवन -लता, मन में जिन पद पाय।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेंद्रादि मुनि 80 करोड़ 54 लाख मुनि इस कूट से सिद्ध भये
तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

3

श्री संभवनाथ भगवान

तुम -पद-पंकज से प्रभो, झर-झर झरी पराग।
जब तक शिव -सुख ना मिले, पीऊँ षट्पद जाग।।
भव-भव, भव-वन भ्रमित हो, भ्रमता-भ्रमता आज।
संभव -जिन भव शिव मिले, पूर्ण हुआ मम काज ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेंद्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 12 लाख 42 हजार 500 मुनि इस कूट से सिद्ध भये को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

4

श्री अभिनंदननाथ भगवान

विषयों को विष लख तजूँ, बनकर विषयातीत।
विषय बना ऋषि ईश को, गाऊँ उनका गीत।।
गुण धारे पर मद नहीं, मृदुतम हो नवनीत।
अभिनंदन जिन! नित नमूँ, मुनि बन मैं भवभीत।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेंद्रादिमुनि 72 कोड़ा कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 42 हजार 700 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

5

श्री सुमतिनाथ भगवान

सुमतिनाथ प्रभु सुमति हो, मम मति है अति मंद।
बोध कली खुल-खिल उठे, महक उठे मकरन्द।।
तुम जिन मेघ मयूर मैं, गरजो बरसो नाथ।
चिर प्रतीक्षित हूँ खड़ा, ऊपर करके माथ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेंद्रादि मुनि 1 कोड़ा कोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 81 हजार 781 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभ भगवान

शुभ्र -सरल तुम, बाल तव, कुटिल कृष्ण -तम नाग ।
तब चिति चित्रित ज्ञेयसे, किन्तु न उसमें दाग ।।
विराग पद्मप्रभु आपके, दोनों पाद -सराग।
रागी मम मन जा वहीं, पीता तभी पराग ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेंद्रादि मुनि 99 करोड़ 87 लाख 43 हजार 757 मुनि इस कूट से सिद्ध भये
तिनके चरणाविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।।

7

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान

अबंध भाते काटके, वसु विध विधिका बंध।
सुपार्श्व प्रभु निज प्रभु-पना, पा पाये आनन्द।।
बांध -बांध विधि -बंध मैं, अन्ध बना मति-मन्द ।
ऐसा बल दो अंध को, बंधन तोड़ूँ द्वन्द ।। 7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेंद्रादि मुनि 49 कोड़ा-कोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 7 हजार 742 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणाविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्री चन्द्रप्रभु भगवान

चन्द्र कलंकित, किन्तु हो, चन्द्र प्रभु अकलंक ।
वह तो शंकित केतु से, शंकर तुम निःशंक ।।
रंक बना हूँ मम अतः मेटो मनका पंक ।
जाप जपूँ जिन - नाम का, बैठ सदा पर्यंक ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेंद्रादि मुनि 984 अरब, 12 करोड़ 80 लाख 84 हजार 555 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

9

श्री पुष्पदंत भगवान

सुविध! सुविधि के पूर हो, विधि से हो अति दूर।
मम मन से मत दूर हो, विनती हो मंजूर ।।
बाल मात्र भी ज्ञान ना, मुझमें मैं मुनि -बाल ।
वबाल भवका मम मिटे, प्रभु-पद में मम भाल।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेंद्रादि शम्बु प्रद्युम्न अनिरूद्ध इत्यादि 72 करोड़ 700 मुनि गिरनार पर्वत से मोक्ष गये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

10

श्री शीतलनाथ भगवान

शीतल चंदन है नहीं, शीतल हिम ना नीर।
शीतल जिन! तव मत रहा, शीतल हरता पीर ।।
सुचिर काल से में रहा, मोह नींद से सुप्त।
मुझे जगा कर, कर कृपा प्रभो करो परितृप्त ।। 10 ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेंद्रादि मुनि 18 कोड़ा कोड़ी 42 करोड़ 32 लाख 42 हजार 905 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।।

11

श्री श्रेयांसनाथ भगवान

अनेकांत की कान्ति से, हटा तिमिर एकांत ।
नितान्त हर्षित कर दिया, क्लान्त विश्व को शांत ।।
निश्रेयस सुख -धाम हो, हे जिनवर श्रेयांस।
तव थुति अविरल मैं करूँ, जब लौं घट में श्वास।।11।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेंद्रादि मुनि 96 कोड़-कोडी 96 करोड़ 96 लाख 9 हजार 542 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणाविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

12

श्री वासुपूज्य भगवान

वसुविध मंगल द्रव्य ले, जिन पूजो सागार ।
पाप- घटे फलतः फले, पावन पुण्य अपार।।
बिना द्रव्य शुचि भाव से, जिन पूजों मुनि लोग।
बिन निज शुभ उपयोग के, शुद्ध न हो उपयोग।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेंद्रादि मुनि चम्पापुर मन्दारगिरी से 1 हजार मुनि सिद्ध भये
तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

13

श्री विमलनाथ भगवान

कराल काला व्याल सम, कुटिल चाल का काल
मार दिया तुमने उसे, फाड़ा उसका गाल।।
मोह अमल वश समल बन, निर्बल मैं भयवान।
विमलनाथ तुम अमल हो, संबल दो भगवान।। 13।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेंद्रादि मुनि 70 कोड़ कोड़ी 60 लाख 6 हजार 742 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

14

श्री अनंतनाथ भगवान

अनन्त गुण पाकर दिया, अनन्त भव का अन्त।
अनन्त सार्थक नाम तव, अनन्त जिन जयवंत।।
अनन्त सुख पाने सदा, भव से हो भयवंत।
अन्तिम क्षण तक मैं तुम्हें, स्मरूँ स्मरें सब संत ।। 14 ।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेंद्रादि मुनि 96 कोड़ा कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 70 हजार 700 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

15

श्री धर्मनाथ भगवान

दया धर्म वर धर्म है, अदया -भाव अधर्म।
अधर्म तज प्रभु धर्म ने, समझाया पुनि धर्म।।
धर्मनाथ को नित नमूँ, सधे शीघ्र शिव शर्म।
धर्म -मर्म को लख सकूँ, मिटे मलिन मम कर्म।।15।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेंद्रादि 29 कोड़ा कोड़ी 19 करोड़ 9 लाख 9 हजार 765 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

16

श्री शांतिनाथ भगवान

शान्तिनाथ हो शांत कर, सातासाता सान्त ।
केवल, केवल- ज्योतिमय, क्लान्ति मिटी सब ध्वान्त।।
सकल ज्ञान से सकल को, जान रहे जगदीश ।
विकल रहे जड़ देह से, विमल नमूँ नत शीश।। 16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेंद्रादिमुनि 9 कोड़ा कोड़ी 9 लाख 9 हजार 999 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

17

श्री कुंथुनाथ भगवान

ध्यान-अग्नि से नष्ट कर, प्रथम पाप परिताप।
कुन्थुनाथ पुरूषार्थ से, बने न अपने-आप।।
ऐसी मुझ पै हो कृपा, मम मन मुझमें आय।
जिस विध पल में लवण है जल में घुल मिल जाय ।। 17।।

ॐ ह्रीं ओम ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्र आदि 96 कोडा कोडी 96 करोड़ 32 लाख 96842 मुनि श्री सम्मेद शिखर जी के ज्ञान धर कूट से सिद्ध हुए उनके चरणारविंद को मेरा मन, वचन ,काय पूर्वक अनंतानंत बार नमोस्तु

श्री अरहनाथ भगवान

नाम मात्र भी नहिं रखों, नाम -काम से काम।
ललाम आतम में करो, विराम आठों याम।।
नाम धरो ''अर'' नाम तव, अतः स्मरूँ अविराम।
अनाम बन शिव-धाम में, काम बनूँ कृत - काम ।।18।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेंद्रादि मुनि 99 करोड़ 99 लाख 99 हजार 999 मुनि अर्थात 1 कम 1 अरब इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

19

श्री मल्लिनाथ भगवान

मोहमल्ल को मार कर, मल्लि नाथ जिनदेव।
अक्षय बनकर पा लिया, अक्षय सुख स्वयमेव।।
बाल ब्रह्मचारी विभो, बाल समान विराग।
किसी वस्तु से राग ना, मम तव पद से राग ।।19।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेंद्रादि मुनि 96 करोड़ मुनि इस कूट से सिद्ध भये
को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

20

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान

मुनि बन मुनिपन में निरत, हो मुनि यति बिन स्वार्थ।
मुनिव्रत का उपदेश दे, हमको किया कृतार्थ।।
यही भावना मम रहीं, मुनिव्रत पाल यथार्थ
मैं भी मुनिसुव्रत बनूँ, पावन पाय पदार्थ ।। 20।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रनाथ जिनेंदादि मुनि 99 कोड़ा कोड़ी 99 करोड़ 99 लाख 999 मुनि इस कुट से सिद्ध भये चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

21

श्री नमिनाथ भगवान

अनेकान्त का दास हो, अनेकान्त की सेव।
करूँ गहूँ मैं शीघ्र से, अनेक गुण स्वयमेव।।
अनाथ मैं जगनाथ हो, नमिनाथ दो साथ।
तव पद में दिन -रात हूँ, हाथ जोड़ नत - माथ ।। 21 ।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेंद्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 1 अरब 45 लाख 7 हजार 942 मुनि इस कुट से सिद्ध हुए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान

नील गगन में अधर हो, शोभित निज में लीन।
नील कमल आसीन हो, नीलम से अति नील।।
शील-झील में तैरते, नेमि जिनेश सलील।
शील डोर मुझ बांध दो, डोर करो मत ढील।। 22।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेंद्रादि शम्बु प्रद्युम्न अनिरुद्ध इत्यादि 72 करोड़ 700 मुनि गिरनार पर्वत से मोक्ष गये तिनके चरणाविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्ध्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

23

श्री पार्श्वनाथ भगवान

खास दासकी आस बस, श्वास-श्वास पर वास।
पार्श्व करो मत दासको, उदासता का दास।।
ना तो सुर-सुख चाहता, शिव -सुख की ना चाह।
तव थुति -सरवर में सदा होवे मम अवगाह ।। 23।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्रादि मुनि 82 करोड़ 84 लाख 45 हजार 742 मुनि परम पुनीत स्वर्णभद्र पर्वत से मोक्ष गये तिनके चरणाविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।।